vmentoracademy.com

आधुनिक भौतिकी
Morden Physics

examtrix.com

दोस्तो! परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण टॉपिक है।

आधुनिक भौतिकी का अध्ययन- संक्षेप में निम्न चरणों में किया जा सकता है।

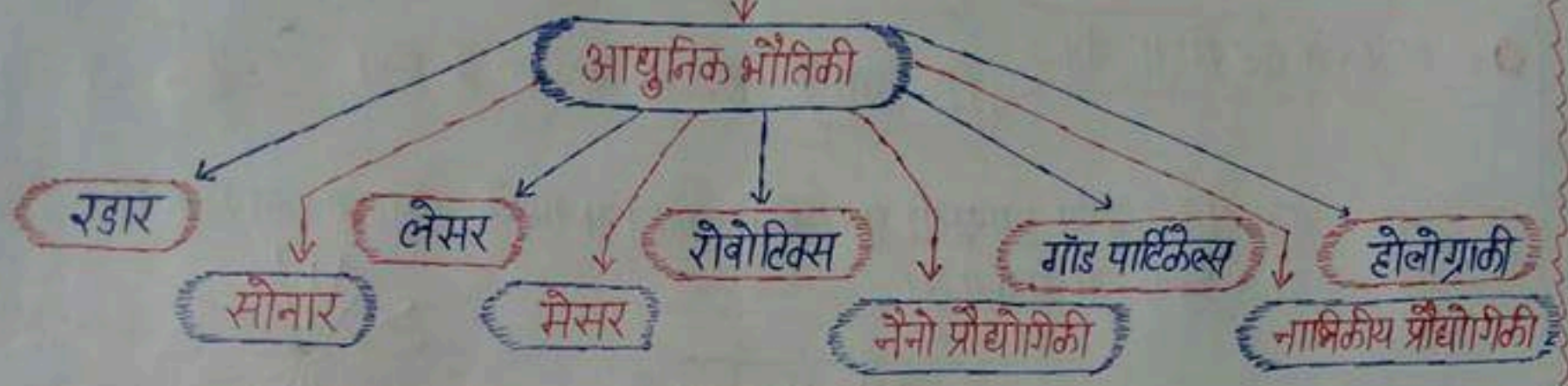

रडार (Radar) रडार का पूरा नाम Radio Ditection and Ranging है। इसका अर्थ है रेडियो तरंगो द्वारा वायुमण्डल में दूर की वस्तुओं की स्थिति, दूरी, वेग आदि का पता लगाना। रेडियो तरंगों की आवृति $1\times10^{9}-3\times10^{11}$ हर्टज के मध्य होती।

* **रडार का जनक** रॉबर्ट वाट्सन डी वाट
* **रडार का सिद्धान्त** प्रतिध्वनि के सिद्धान्त से मिलता जुलता है।
* **रडार का उत्पादन** भारत में रडार यंत्र का निर्माण करने वाली संस्था ERDE (Electronic Research Development Establishment) है, जिसका मुख्यालय बैंगलरु में स्थित है।

- रडार के यंत्र के दो मुख्य भाग होते हैं। → सम्प्रेषण, संग्राहक

नोट रेडियो तरंगो को लगातार न भेजकर थोड़े-2 समयान्तराल (1/1000 सै०) के बाद तरंगो के स्पंद भेजे जाते हैं। जो बहुत दूर तक जाते हैं। इन तरंगो के माध्यम से युद्ध के दिनों में दुश्मन के वायुयान की स्थिति, दूरी, दिशा, वेग का पता लग जाता है।

Imp

भारत में बने कुछ प्रमुख रडारो के नाम

* इरमा
* इन्द्र (II)
* रोहिणी
* रानी
* अपर्णा
* रेवती
* रश्मि
* 3D
* आकाशदीप
* इन्द्र (प्रथम
* शांत रडार
* राजेन्द्र रडार

भारत द्वारा आयातित रडार

* ग्रीन पाइन रडार - इजराइल से
* अवाक्स रडार - इजराइल से

By- MOHIT TEZZAS

2- सोनार (Sonar)

- सोनार (Sound Navigation and Ranging) का संक्षिप्त रूप है। जिसमें पराश्रव्य ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है।
  सोनार के द्वारा समुद्र में स्थित वस्तुओं का पता लगाया जाता है।

- भारत के कुछ सोनार यंत्र -
  - 1- पंचेन्द्रिय - इसका विकास पनडुब्बी के लिये किया गया
  - 2- हंसा - इसका नौसेना के लिये

इस यंत्र के द्वारा जासूसी पनडुब्बियों, खनिज संसाधनों, समुद्र तल का मानचित्र प्राप्त किया जा सकता है।

3- लेसर (Laser)

- लेसर - (Light Amplification by Stimulated Emission of Radition)
- शाब्दिक अर्थ - विकिरण अभिप्रेषित उत्सर्जन द्वारा प्रकाश प्रवर्धन।
- खोजकर्ता - 1960 में थियोडोर मैमेन (अमेरिका) - (इन्होंने ही बनाया था)
- लेसर के सिद्धांत का विकास - 1950 में श्री शैलो व प्रो० चार्ल्स सी० टाउन्स ने किया था।

लेसर प्रकाश के गुण

- यह एकवर्णी (मोनोक्रोमेटिक) प्रकाश होता है।
- यह ठोस, द्रव, गैस तीनों में चल सकता है।
- यह पारदर्शी माध्यम में गमन कर सकता।
- यह प्रेरित उत्सर्जन के सिद्धान्त पर कार्य करता।

लेसर के प्रकार

1- ठोस लेसर - जैसे रूबी लेसर
2- द्रव लेसर
3- गैस लेसर - जैसे हीलियम लेसर
4- लोसिक लेसर
5- रंजक 6- अर्द्धचालक 7- धातुवाष्प

लेसर के उपयोग

चिकित्सा क्षेत्र में
- कैंसर, ट्यूमर, पथरी,
- आँखों, दांतों, शल्य क्रिया आदि में।

उद्योग क्षेत्र में
- हीरा तराशने में
- दस्तावेजों का अध्ययन,
- मुद्रण तकनीक
- सुरंग बनाने
- धातुओं में छेद या काटने में।

प्रतिरक्षा क्षेत्र में
- दुश्मनों के अस्त्र-शस्त्र नष्ट करने में

अन्य क्षेत्रों में
- नाभिकीय संलयन क्रिया में
- मौसम का पूर्वानुमान लगाने में।

संचार क्षेत्र में
- टी०वी० में।
- फिंगर प्रिंट
- C.D./D.V.D में डाटा भरने व पढ़ने में।

भारत में

भारत में इसकी शुरुआत 1960 के दशक में हुई।
भारत में गैलियम आर्सेनिक अर्द्धचालक लेसर किरणों का निर्माण 1964 में BARC (भाभा परमाणु अनुसंधान संस्थान) (मुम्बई) के द्वारा किया गया था।
- आठवीं पंचवर्षीय योजना में राष्ट्रीय लेसर कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

vmentoracademy.com
examtrix.com

4 मेसर (Maser)

मेसर (MASER) (Micro Wave Amplification by stimulated Emmission of Radiation)

शाब्दिक अर्थ विकिरण के उद्दीप्त उत्सर्जन द्वारा माइक्रो तरंगो का प्रवर्धन।
इसके द्वारा माइक्रो वेव तरंगो का एकवर्णी किरण पुंज प्राप्त होता है।

उपयोग
- इसके द्वारा अंतरिक्ष में दूर-2 तक संदेश भेजे जा सकते है।
- इसके द्वारा सर्जरी व जटिल ऑपरेशन आसानी से किये जा सकते है।
- आँख के ट्यूमर ऑपरेशन में मेसर किरणों का प्रयोग किया जाता है

5 रोबोटिक्स (Robotics)

- रोबोट के विकास से सम्बन्धित विज्ञान को रोबोटिक्स कहते हैं।
- रोबोट उस विद्युत यान्त्रिक यंत्र को कहते है जो मानव द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले कठिन व बार-2 किये जाने वाले कार्यो को सम्पन्न करता है।
- रोबोट चैक भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है बंधुआ मजदूर / गुलाम
- रोबोट शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम - कारेल चोपेक ने किया।
- रोबोटिक्स का प्रयोग सर्वप्रथम - आसिमोव ने किया।
- विश्व का पहला रोबोट अमेरिका की स्पेयरी जायरोस्कोप कम्पनी ने 1913 में जॉर्ज बनाया था। जो स्वचालित विमान चालक था।
- 1939 में अमेरिका ने चलता फिरता रोबोट एलैक्ट्रो बनाया।
- हाल ही में जापान ने किरोबो, मिराता नामक रोबोट बनाये जो बोल सकते हैं। तथा किरोबो को अन्तरिक्ष अनुसंधान के लिये प्रयोग किया जा रहा है

इनके उपयोग से फायदा
- बम निरोधक के रूप में
- भारी बोझ उठाने में
- मलबे में दबे लोगो को खोजने में
- घरेलू कार्यों में आदि।

आधिकांश रोबोट ध्वनि तरंगो पर आधारित होते है।

इनके उपयोग से नुकसान
- भविष्य में मानव जाति के लिये
- खतरा उत्पन्न कर सकता है
- बेरोजगारी बढ़ सकती है।

भारत में इसका विकास काफी कम मात्रा में हुआ है। इस क्षेत्र में निम्न संस्थाएं कार्यरत है - H.M.T.C, IIT, IIS। भारत में सबसे पहले जादवपुर विश्वविद्यालय ने 1981 में जैरोब नामक 'पिक & प्लस' रोबोट बनाया था।

लखनऊ की विद्यार्थी जूली मल्होत्रा ने (Ti-Back) नामक रोबोट बनाया जो जमीन मे छिपे विस्फोटकों को खोज निकालता है

- Frubber नामक रबर का प्रयोग रोबोट में त्वचा निर्माण में किया जाता है

राजभाषा (Official Language)

अनुसूची 8 | भाग-17 | अनुच्छेद 343-351

* संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इसी कारण प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

राजकीय भाषा आयोग - अनुच्छेद 344 के तहत प्रथम राजकीय भाषा आयोग का गठन 1955 में तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने बी.जी खेर की अध्यक्षता में गठन किया।

किसी भी भाषा को आठवीं सूची में शामिल किया जाता है। संविधान के प्रारम्भ में केवल 14 भाषाओं को राजकीय भाषा का दर्जा प्राप्त था। वर्तमान में 22 भाषाओं का उल्लेख है।

- संशोधनो द्वारा जोड़ी गई भाषा -

राजभाषा BY-MOHIT

* 21 वें संशोधन (1967) द्वारा सिन्धी को राजकीय भाषा का दर्जा दिया गया।
* 71 वें संशोधन (1992) द्वारा नेपाली, कोंकड़ी मणिपुरी भाषाओं को जोड़ा गया।
* 92 वें संशोधन (2003) द्वारा बोडो, डोगरी, मैथिली, संथाली भाषाओं को जोड़ गया।

ट्रिक: 71 नेपाली, मणि को लाये, 92 बदमाशो ने चुराये (बोडोमास)

- 71 वे संशोधन द्वारा
  - नेपाली
  - मणिपुरी
  - कोंकड़ी
- 92 वें संशोधन द्वारा
  - बोडो
  - डोगरी
  - मैथिली
  - संथाली

* संस्कृत उत्तराखण्ड की द्वितीय राजकीय भाषा है।
* उत्तर प्रदेश की दूसरी राजकीय भाषा उर्दू है।
* 22 भाषाये - असामिया, बंगाली, हिन्दी (अबहीं) गुजराती, मलयालम, मराठी (गम्म) ओड़िया, कन्नड़ (O.K) संस्कृत, तेलगू, उर्दू, (सताउ), पंजाबी. तामिल, सिन्धी, नेपाली, मणिपुरी, कोंकड़ी (नमक) बोडो, डोगरी, मैथिली संथाली (बोडोमास)

vmentoracademy.com examtrix.com

प्रमुख गुरु व शिष्य

शिष्य	गुरु
शंकराचार्य	गोविन्द योगी
रामानंद	राघवानंद
कबीर	रामानंद
रैदास	रामानंद
पद्मावती	रामानंद
वल्लभाचार्य	विष्णुस्वामी
सूरदास	वल्लभाचार्य
मीराबाई	रैदास
तुलसीदास	नरहरिदास
जायसी	शेख मोहिदी
मैथिलीशरण	महावीर प्रसाद द्विवेदी
प्रेमचन्द्र	महावीर प्रसाद द्विवेदी
निराला	महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी में सर्वप्रथम: कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- हिन्दी की प्रथम रचना - श्रावकाचार
- हिन्दी के प्रथम कवि - सरहपा
- हिन्दी की प्रथम रचना - पृथ्वीराजरासो
- हिन्दी का प्रथम महाकाव्य पृथ्वीराजरासो
- हिन्दी के प्रथम गीतकार विद्यापति
- खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य प्रिय प्रवास
- छायावाद की प्रथम रचना झरना
- हिन्दी का प्रथम उपन्यास परीक्षा गुरु
- हिन्दी का प्रथम एकांकी एकघूंट
- खड़ी बोली (पद्य) का प्रथम प्रयोगकर्ता - अमीर खुसरो
- हिन्दी का प्रथम हिन्दी पत्र उदंत मार्तण्ड
- सर्वप्रथम हिन्दी दैनिक समाचार सुधा वर्षण
- विश्व का प्रथम व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी (पाणिनी)
- हिन्दी का प्रथम कोशकार अमीर खुसरो
- ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रथम साहित्यकार - पंत (चिदंबरा)
- ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रथम महिला " - महादेवी वर्मा (यामा)
- प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन - नागपुर (1975)
- हिन्दी भाषा का प्रथम सर्वेक्षक - अमीर खुसरो
- हिन्दी की प्रथम रचना - श्रावकाचार
- हिन्दी की आदि कवयित्री - मीराबाई
- भारत का प्रथम समाचार पत्र बंगाल गजट
- हिन्दी प्रदेश से प्रकाशित होने वाला प्रथम समाचार पत्र बनारस अखबार

प्रमुख वाद

वाद	प्रवर्तक
रस सम्प्रदाय	भरतमुनि
अलंकार सम्प्रदाय	भामह, मम्मट
रीति सम्प्रदाय	दण्डी, वामन
रीतिवाद	केशवदास
प्रयोगवाद	अज्ञेय
छायावाद	जयशंकर प्रसाद

BY- MOHIT TEZZA

vmentoracademy.com examtrix.com

हिन्दी भाषा से सम्बन्धित विवरण -

भाषा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के भाष् धातु से हुई है। जिसका अर्थ होता है व्यक्त करना।

हिन्दी का विकास चार शाखाओं में हुआ -

- पूर्वी हिन्दी
  - अवधी
  - बघेली
  - छत्तीसगढ़ी
- पश्चिमी हिन्दी
  - राजस्थानी
  - गुजराती
  - पंजाबी
  - कन्नौजी
  - बुन्देली
  - ब्रजभाषा
  - खड़ी
- दक्षिणी हिन्दी
  - म० प्र०
  - बम्बई
  - कोचीन
  - मैसूर
  - द० भारत
- हिन्दुस्थानी → दोआब से दिल्ली तक

देवनागरी की व्युत्पत्ति : एक दृष्टि में

प्राचीन संस्कृत
- लौकिक संस्कृत
- पहली प्राकृत

पाली (दूसरी प्राकृत)
- शौरसेनी
  - नागर अपभ्रंश
    - पश्चिमी हिन्दी
- अर्द्धमगधी
  - अर्द्धमगधी अपभ्रंश
    - पूर्वी हिन्दी
- मगधी

पश्चिमी हिन्दी + पूर्वी हिन्दी → वर्तमान हिन्दी

TEZZAS CLASSES BY MOHIT YADAV

vmentoracademy.com

हिन्दी साहित्य रचना एवं रचनाकार

examtrix.com

आधुनिक आर्यभाषाओं के विकास के साथ ही 10वीं शताब्दी ई. में हिन्दी भाषा का विकास हुआ। इससे पूर्व अपभ्रंश व अवहट्ट में रचनायें हो रही थी। अपभ्रंश तथा अवहट्ट से निकली बोलियों ने हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चन्दबरदाई की रचना पृथ्वीराजरासो हिन्दी भाषा की प्रथम रचना मानी जाती है।

हिन्दी साहित्य के विकास तथा विस्तार के बाद इतिहास लेखन की प्रवृत्ति 19वी शताब्दी में सामने आयी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सर्वाधिक मानक इतिहास हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा। और काल विभाजन सामने रखा।

रामचन्द्र शुक्ल का काल विभाजन

- आदिकाल (वीरगाथाकाल) → सम्वत 1050 से 1375
- मध्यकाल
  - पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) → 1375 से 1700
  - उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) → 1700 से 1900
- आधुनिक काल (1900-1984)
  - भारतेन्दु काल
  - द्विवेदी काल
  - छायावाद काल

आदिकाल (वीरगाथा) के रचनाकार -

आज मधु भट्ट ने पति संग चन्दा देखा

- आज → जगनिक
- मधु → मधुकर
- भट्ट → भट्टकेदार
- ने → नल्लसिंह
- पति → विद्यापति, दलपति, नरपति
- संग → शारंगधर
- चन्दा → चन्दबरदाई
- देखा → अमीर खुसरो

भक्ति काल के रचनाकार - (स्वर्ण काल)

रसमी जी के सब दास

- र → रहीम
- मीरा
- जायसी
- दास → सूरदास, सुन्दरदास, तुलसीदास, रैदास, कबीरदास, नरोत्तमदास, रहीमदास, नंददास

रीतिकाल के रचनाकार -

विभूषण आप के बोध से माघ देव आये।

- विभूषण → भूषण
- आप → आलम
- के → केशव
- बोध → बोधा
- से → सेनापति
- माघ → मतिराम
- देव → घनानंद
- देव → देव
- पद्माकर
- विहारी

TEZZAS CLASSES BY MOHIT YADAV

सामान्य हिन्दी

संस्कृत साहित्य की मुख्य पुस्तके -

* रामायण - वाल्मीकि
* भगवद्गीता - वेदव्यास
* महाभारत - वेदव्यास
* रघुवंशम - कालिदास
* मेघदूतम् - कालिदास
* कुमारसंभवम् - कालिदास
* स्वप्नवासवदत्तम् - भास
* बुद्ध चरितम् - अश्वघोष
* पंचतंत्र - विष्णुशर्मा
* हितोपदेश - विष्णुशर्मा
* कादम्बरी - बाणभट्ट
* हर्षचरितम् - बाणभट्ट
* किरातार्जुनीय - भारवि
* दसकुमार चरितम् - दण्डी
* राजतरंगणी - कल्हण
* अष्टाध्यायी - पाणिनी
* अर्थशास्त्र - कौटिल्य
* गीतगोविन्द - जयदेव
* नाट्यशास्त्र - भरत मुनि
* काव्य प्रकाश - मम्मट
* साहित्यदर्पण - विश्वनाथ
* चण्डीशतक - बाणभट्ट
* महाभाष्य - पतंजलि
* कामसूत्र - वात्स्यायन
* ऋतुसंहार - कालिदास
* शिशुपाल वध - माघ
* कर्पूर मंजरी - राजशेखर
* बृहत्कथा - गुणाढ्य
* काव्यमीमांसा - राजशेखर
* अभिज्ञानशाकुन्तलम - कालिदास
* मुद्राराक्षस - विशाखदत्त
* उत्तररामचरितम् - भवभूति
* काव्यालंकार - भामह
* हर्षचरित - बाणभट्ट

कालिदास की प्रमुख रचनायें -

ट्रिक: ऋतु कुमार अभी पुष्प में है।

- ऋतु → ऋतुसंहार
- कुमार → कुमारसंभवम्
- अभी → रघुवंशम, अभिज्ञान...
- पुष्प → पुष्पबाणम, मेघदूतम्

रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचनाये -

ट्रिक: रेण, रश्मि, उर्वशी, परशु, कहो संगीत हरे

- रेण → रेणुका
- रश्मि → रश्मिरथ
- उर्वशी → उर्वशी
- परशु → परशुराम की प्रतिज्ञा
- कहो → कुरुक्षेत्र
- संगीत → हुंकार, संस्कृत के 4 अध्याय
- हरे → गीत, हारे की हरि

हरिवंश राय बच्चन की रचनाये -

ट्रिक: मधु निशा दसद्वार से

- मधु → मधुकलश, मधुबाला, मधुशाला
- निशा → निमंत्रण, निशा
- दसद्वार से → दसद्वार से सोपान तक

TEZZAS CLASSES BY MOHIT YADAV

vmentoracademy.com examtrix.com

सामान्य हिन्दी

हिन्दी साहित्य की प्रमुख रचनायें.

हिन्दी साहित्य की रचनायें.

* तुलसीदास- कवितावली, दोहावली, विनय पत्रिका, रामचरित मानस
* सूरदास - सूरसागर, साहित्यलहरी, भ्रमरगीत
* कबीरदास - साखी, सबद, रमैनी, दोहे, बीजक
* रहीमदास - दोहावली, बरवै, मदनाष्टक, खेल कौतुकम्
* रैदास - रैदास बानी, सतबानी
* सुमित्रानन्दन - ज्योत्सना, युगवाणी, चिदम्बरा
* श्यामनारायण - हल्दी घाटी
* हरिवंशराय बच्चन - मधुशाला
* मुंशी प्रेमचन्द - गबन, गोदान, रंगभूमि, कायाकल्प
* सुभद्रा कुमारी - झांसी की रानी
* रामचन्द्र शुक्ल - चिन्तामणि
* रामधारी सिंह - उर्वशी
* महादेवी वर्मा - निहारिका, नीरजा, यामा
* भारतेन्दु हरिश्चन्द्र - भारत दुर्दशा, सत्य हरिश्चन्द्र
* जयशंकर प्रसाद - कामायनी, आंसू, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु
* मैथिलीशरण - भारत भारती, यशोधरा
* सूर्यकान्त त्रिपाठी - अनामिका, गुंजन, परिमल, धूप की कली
* बोधा - इश्कनामा, विरहबारीश
* मुल्ला दाउद - चंदायन
* जायसी - पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम
* घनानंद - सुजान सागर, विरह लीला
* बिहारी - सतसई
* कुतुबन - मृगावती
* धर्मवीर भारती - गुनाहों का देवता
* नरोत्तमदास - सुदामा चरित
* केशवदास - राम चन्द्रिका
* अयोध्या सिंह - प्रिय प्रवास
* धूमिल - सड़क से संसद तक
* अमृतलाल - अमृत और विष
* देवकीनंदन - चन्द्रकान्ता
* जैनेन्द्र कुमार - त्याग पत्र
* यशपाल - झूठा सच
* भगवती चरण - चित्रलेखा
* फणीश्वर नाथ - मैला आँचल
* मुक्तिबोध - चाँद का मुँह टेढ़ा
* सोहनलाल - भैरवी
* रसखान - प्रेमवाटिका
* आलम - आलमकेलि
* विद्यापति - कीर्तिलता, कीर्तिपताका
* नल्ल सिंह - विजय पालरासो
* दलपति विजय - खुमान रासो
* जगनिक - परमालरासो (आल्हा)
* नरपति नाल्ह - बीसलदेव रासो
* चन्दवरदाई - पृथ्वीराज रासो
* शिवप्रसाद - नीला चाँद
* अमृतराय - कलम का सिपाही
* मीराबाई - पदावली
* युगवाणी - सुमित्रानंदन

vmentoracademy.com examtrix.com

हिन्दी व्याकरण

भाषा की सबसे छोटी इकाई - वर्ण है।

हिन्दी वर्णमाला में स्वरों की संख्या - 11

व्यंजनों की संख्या - 33

संयुक्त व्यंजनों की संख्या - 4 क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

द्विगुण व्यंजन - ड़, ढ़

वर्ण भेद

स्वर

- ह्रस्व - अ, इ, उ, ए, ओ, ऋ (उच्चारण में कम समय)
- दीर्घ - आ, ई, ऊ, ऐ, औ (उच्चारण में अधिक समय)
- अग्रस्वर - इ, ई, ए, ऐ
- पश्चस्वर - आ, उ, ऊ, ओ, औ
- मध्य स्वर - अ
  - विवृत - आ
  - अर्द्ध विवृत → ए, ओ
- शिथिल - अ, इ, उ
- कठोर - आ, ई, ऊ
  - अर्द्ध संवृत
- अवर्तुल - इ, ई, ए, ऐ
- वर्तुल - उ, ऊ, ओ, औ
  - संवृत - इ, ई, उ, ऊ
- अर्द्ध वर्तुल - आ

पार्श्विक व्यंजन - ल लुंठित - र

उत्क्षिप्त व्यंजन - ड़, ढ़

व्यंजन

- स्पर्श - संख्या 25 है। क से म तक
- अन्तस्थ - य, र, ल, व
- ऊष्म - श, ष, स, ह

स्पर्श व्यंजन - 5 वर्गों में बंटे हैं -

स्थान	वर्ग	व्यंजन
* कण्ठ्य	कवर्ग	क, ख, ग, घ, ङ
* तालु	चवर्ग	च, छ, ज, झ, ञ
* मूर्धन्य	टवर्ग	ट, ठ, ड, ढ, ण
* दन्त्य	तवर्ग	त, थ, द, ध, न
* ओष्ठ	पवर्ग	प, फ, ब, भ, म

- * अघोष - प्रत्येक वर्ग का पहला व दूसरा व्यंजन
- * घोष - प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा व्यंजन
- * अल्पप्राण - प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवा व्यंजन
- * महाप्राण - प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा व्यंजन
- * अनुनासिक - प्रत्येक वर्ग का आन्तिम अक्षर

2- शब्द-विचार

vmentoracademy.com examtrix.com

* अर्थ के आधार पर -

1. सार्थक - राम, घर, नगर
2. निरर्थक - धम्म, हल्ल, चल्ल

बनावट के आधार पर

- रूढ़ि - जिसके खण्ड करने पर अर्थपूर्ण शब्द न निकले। जैसे - राम = रा + म
- यौगिक - जिसके खण्ड करने पर अर्थपूर्ण शब्द निकले जैसे - विद्यालय = विद्या + आलय
- योग-रूढ़ि - जो अपना सामान्य अर्थ छोड़ विशेष अर्थ देते हैं। इसमे प्रायः पर्यायवाची शब्द आते - जलद = बादल

MOHIT

उत्पत्ति के आधार पर शब्द

1- तत्सम - संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों बोले जाते हैं। जैसे - अग्नि, आम्र, पुष्प आदि।

2- तद्भव - संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में आने पर रूप बदल गया। जैसे - आग, फूल, आम आदि।

3- देशी - जो शब्द देशी भाषा से लिये गये (ग्रामीण क्षेत्रो में बोले जाते हैं) जैसे - लुटिया, डिब्बा आदि।

4- विदेशी - जो शब्द विदेशी भाषाओं से लिये गये हैं। जैसे - हॉस्पीटल, अदालत, ऑरत, लाश आदि।

संकर शब्द - जो शब्द देशी और विदेशी भाषाओं से मिलकर बने हैं। जैसे - टिकिट घर, आदि।

रूपान्तर के आधार पर -

1- विकारी - लिंग, वचन, कारक के कारण जिन शब्दो में परिवर्तन होता है जैसे - तुम, वह, बालक।

2- अविकारी - लिंग, वचन, कारक के कारण जिन शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे - आगे, पीछे, यहाँ, वहाँ (ये अव्यय भी कहलाते हैं)

vmentoracademy.com examtrix.com

वाक्य भेद Kinds of Sentences

वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित समूह वाक्य कहलाता है।

वाक्य के भेद

अर्थ के आधार पर 8 प्रकार के

- **विधानवाचक** क्रिया के करने की सूचना मिले।
  जैसे- राम पढ़ रहा है।
- **निषेधवाचक** नहीं आये।
  जैसे- राम ने खाना नहीं खाया।
- **आज्ञावाचक** आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश का बोध हो।
  जैसे- राम तुम बैठकर पढ़ो।
- **प्रश्नवाचक** जिनमें ? (प्रश्नवाचक चिह्न) लगा हो।
  जैसे- राम कहाँ जाएगा ?
- **इच्छावाचक** इच्छा, आशीष, शुभकामना का बोध हो।
  जैसे- शाबाश! तुमने बहुत अच्छा कार्य किया।
- **संदेहवाचक** जिनमें संदेह या संभावना व्यक्त हो
  जैसे- शायद आज राम आजाए।
- **विस्मयवाचक** आश्चर्य, घृणा, क्रोध, शोक आदि का भाव हो।
  जैसे- वाह! कितना सुन्दर दृश्य है।
- **संकेतवाचक**- एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है।
  जैसे- यदि परिश्रम करोगे, तो अवश्य सफल होगे।

रचना के आधार पर 3 प्रकार के

- सरल वाक्य
- संयुक्त वाक्य
- मिश्रित वाक्य

पहचानने की ट्रिक

- सरल वाक्य में एक ही क्रिया होती है।
  जैसे- राकेश पढ़ता है।
- संयुक्त वाक्य दो सरल वाक्यों से बनता है, तथा ये वाक्य और, एवं, या, अतः, फिर भी, तो, नहीं तो, किन्तु, पर से जुड़े हों।
  जैसे- वह सुबह गया और शाम को लौट आया।
- मिश्रित वाक्यों में एक मुख्य तथा गौड़ उपवाक्य होते हैं तथा ये वाक्य कि, जो, वह, जितना, उतना, जैसा, वैसा, जब, तब, जहाँ, वहाँ, जिधर, उधर, यदि आदि से जुड़े हों।
  जैसे- मैं जानता हूँ कि तुम्हारे अक्षर अच्छे नहीं व

By- MOHIT TEZZA

vmentoracademy.com examtrix.com

संज्ञा- NOUN

- किसी प्राणी वस्तु, स्थान, भाव आदि का नाम संज्ञा कहलाती है।

अर्थात जब हम किसी भी शब्द का नाम सुनें, अगर उस शब्द की आपके मन में तस्वीर बन जाए तो समझना वह संज्ञा है, अगर न बने तो संज्ञा नहीं है।

जैसे- मैंने मिठाई शब्द सुना वैसे ही हमारे मन में तस्वीर बन गई लड्डू, पेड़ा आदि की।

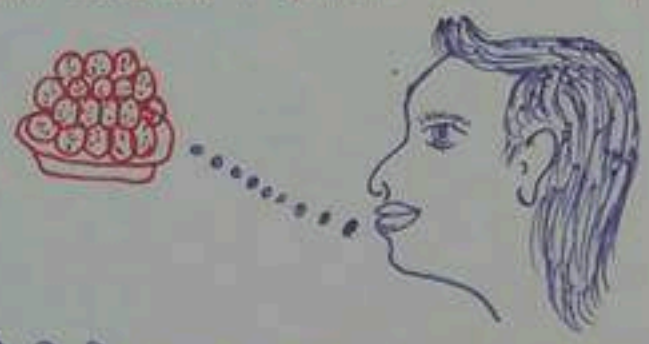

अथवा

जब तस्वीर न बने तो What लगा के देखो उसका उत्तर संज्ञा ही मिलेगी।
जैसे- Honesty is the best policy. Honesty (संज्ञा है)

By Mohit Tertej

संज्ञा (व्युत्पत्ति के आधार पर तीन भेद हैं।)

- रूढ
- यौगिक
- योगरूढ

संज्ञा (अर्थ के आधार पर पाँच भेद हैं।)

- व्यक्तिवाचक Proper Noun — किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान का बोध हो। -जैसे- राम, गंगा, पटना
- जातिवाचक Common Noun — जो किसी जाति का बोध कराए। → नदी, लड़का, पर्वत
- द्रव्यवाचक Material — ठोस, द्रव, गैसीय पदार्थ का बोध हो। → सोना, तेल, धूआँ
- समूहवाचक Collective — जब समूह का बोध हो। → सेना, टीम, सभा
- भाववाचक Abstract — जब भाव, गुण दशा का बोध हो। → क्रोध, मिठास, यौवन

भाववाचक संज्ञा का निर्माण-

- **विशेषण से**
  - * सुन्दर ⟶ सुन्दरता
  - * वीर ⟶ वीरता
- **क्रिया से**
  - * चढ़ना ⟶ चढ़ाई
  - * थकना ⟶ थकान
- **जातिवाचक संज्ञा से**
  - * पुरुष ⟶ पुरुषत्व
  - * नारी ⟶ नारीत्व
- **सर्वनाम से**
  - * अपना ⟶ अपनत्व
  - * मम ⟶ ममत्व
- **अव्यय से**
  - * दूर ⟶ दूरी
  - * निकट ⟶ निकटता

vmentoracademy.com examtrix.com

क्रिया

- जिस शब्द से किसी कार्य का होना या करना समझा जाय, उसे क्रिया कहते हैं।

By: MOHIT TEZZA

क्रिया

रचना की दृष्टि से 2 भेद हैं।

सकर्मक

जिस क्रिया के साथ कर्म जुड़ा हो।

जैसे- राम फल खाता है।

इस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म (फल) जुड़ा है।

अकर्मक

जिस क्रिया के साथ कर्म न जुड़ा हो।

जैसे- राम खाता है।

इस वाक्य मे क्रिया के साथ कर्म नहीं है।

- पहचानने की ट्रिक — सकर्मक व अकर्मक क्रियाओं की पहचान के लिये क्या लगा के देखो. यदि क्या का उत्तर मिले तो सकर्मक क्रिया, अगर न मिले तो अकर्मक क्रिया।

जैसे- 1. राम फल खाता है। (वाक्य में कौन सी क्रिया है?)

⇒ अब आप क्या लगा के देखो, जैसे राम क्या खाता है? तो हमें क्या का उत्तर मिला - फल। तो वाक्य में सकर्मक क्रिया है।

vmentoracademy.com examtrix.com

क्रिया के कुछ अन्य भेद भी है- जैसे

सहायक क्रिया सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के साथ जुड़ती है।
जैसे- मैं घर जाता हूँ → हूँ स० क्रिया है

पूर्वकालिक क्रिया जब कर्ता एक क्रिया को समाप्त कर दूसरी क्रिया को आरम्भ कर देता है तो पहली क्रिया पूर्वकालिक होती।
जैसे- सीता भोजन करके सो गई।
पूर्वकालिक

नामबोध क्रिया संज्ञा या विशेषण के साथ जुड़ने से बनती।
जैसे- • लाठी + मारना = लाठी मारना (नामबोध क्रिया)
पीला + पड़ना = पीला पड़ना (" ")

द्विकर्मक क्रिया जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं।
जैसे- राम ने श्याम को थप्पड़ मारा।
कर्म कर्म

संयुक्त क्रिया जब कोई क्रिया दो क्रियाओं के संयोग से बनती है।
जैसे- • मुझे पढ़ने दो। • वह पेड़ से कूद पड़ा।

क्रियार्थक संज्ञा जब कोई क्रिया संज्ञा की तरह प्रयोग की जाती।
जैसे- टहलना स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है।

By - Mohit Tiwari

vmentoracademy.com examtrix.com

सन्धि - दो वर्णों के आपस में मिल जाने से जो विकार उत्पन्न होता है।

सन्धि तीन प्रकार की होती
- स्वर सन्धि — स्वरों का मेल
- व्यंजन सन्धि — स्वर-व्यंजन का मेल
- विसर्ग सन्धि — विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन का मेल

स्वर सन्धि

- दीर्घ सन्धि — जब सवर्णी स्वर पास-2 आयें (दीर्घ हो जाते) → हिम+आलय = हिमालय; मातृ+ऋणम् = मातृणम्
- गुण सन्धि — अ, आ की मात्रा आये (देव+इन्द्र = देवेन्द्र; सूर्य+उदय = सूर्योदय)
- वृद्धि सन्धि — अ, आ की मात्रा आये (सदा+एव = सदैव; उष्ण+ओदन = उष्णौदन)
- यण सन्धि — आधा अक्षर व उसके पीछे व, य, अ, आ की मात्रा आये (नि+ऊन = न्यून; सु+अल्प = स्वल्प)
- अयादि सन्धि — कोई मात्रा न आये (कुछ अपवाद) → पो+अन = पवन; ने+अन = नयन

व्यंजन सन्धि

त्, द्, न्, ल्, ज् = त्

ग् = क् ड् = ट् ज् = च्

ं = म् में बदल जाते।

- जगन्नाथ = जगत्+नाथ
- उल्लास = उत्+लास
- उज्ज्वल = उत्+ज्वल
- अजंत = अच+अंत
- किंचित = किम्+चित

विसर्ग सन्धि

रो, श्, स्, ष्, र् = :

विसर्ग में बदल जाते।

- मनोरथ = मनः+रथ
- पुरस्कार = पुरः+कार
- निर्गुण = निः+गुण

इन्हें भी जाने!

* श - ईश में बदल जाता है।
* विच्छेद करते समय दोनो शब्द अर्थपूर्ण निकलें तो सही अन्यथा गलत।

vmentoracademy.com examtrix.com

समास - समास का शाब्दिक अर्थ होता है 'संक्षिप्त'।

समास के छः प्रकार होते हैं।

* 1. अव्ययीभाव समास
  - इसका प्रथम पद प्रधान होता है।
  - इसमे समास पद अव्यय होता है।
* 2. तत्पुरुष समास
  - इसमें आखिर पद प्रधान होता है।
  - विग्रह करने पर 'का, को, के लिए, में, से' मिलते
* 3. कर्मधारय समास
  - पहला पद विशेषण होता है।
  - इसमें विशेषता बताई जाती है।
* 4. बहुव्रीहि समास
  - किसी तीसरे पद की प्रधानता होती
  - देवी-देवताओं के नाम, पर्याय, अनेक शब्दों के लिये एक शब्द आते हैं।
* 5. द्विगु समास
  - प्रथम पद संख्या बोधक होता
  - शब्द के पहले संख्या हो
* 6. द्वन्द्व समास
  - दोनों पद प्रधान होते हैं।
  - इसमें जोड़ बनता है (-) योजक का चिह्न

नोट: तत्पुरुष समास के भेद -

* कर्म तत्पुरुष (को लगाकर देखो) ⟶ गगनचुम्बी, स्वर्गप्राप्त
* करण तत्पुरुष (से लगाकर देखो) ⟶ शोकग्रस्त, श्रमजीवी
* सम्प्रदान तत्पुरुष (के लिये लगाकर देखो) ⟶ गोशाला, रसोईघर, देशभक्ति
* अपादान तत्पुरुष (से अलग होना) ⟶ बलहीन, दूरागत
* सम्बन्ध तत्पुरुष (का लगाकर देखो) ⟶ राजभवन, राजकुँवर
* अधिकरण तत्पुरुष (में लगाकर देखो) ⟶ वनवास, कविश्रेष्ठ

TEZZAS CLASSES BY MOHIT YADAV

vmentoracademy.com examtrix.com

अलंकार - अलंकार का अर्थ होता है - आभूषण

मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं।

1. शब्दालंकार
   - अनुप्रास
   - यमक
   - श्लेष
2. अर्थालंकार
   - अतिशयोक्ति
   - रूपक
   - उपमा
   - उत्प्रेक्षा
   - विभावना
   - भ्रान्तिमान
   - सन्देह
   - असंगति
   - मानवीकरण
3. उभयालंकार

* उपमा - सा, -सी आये।
* उत्प्रेक्षा - मानो, मनु, मनहुँ, जानो, जनु आये
* भ्रान्तिमान - जहाँ भ्रम की स्थिति हो।
* असंगति - मुख्य उद्देश्य से भटक जाना
* सन्देह - जहाँ सन्देह उत्पन्न हो
* मानवीकरण - जहाँ जड़ पदार्थों के उपादानों को मानवी रूप दिया जाये।
* विभावना - जब किसी कार्य-कारण की विलक्षण बात कही जाती है।

* अनुप्रास अलंकार — एक ही वर्ण बार-बार आये।
  - तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहुछाए
* यमक अलंकार — एक ही शब्द एक से अधिक बार आये।
  - काली घटा का घमण्ड घटा।
* श्लेष अलंकार — सभी शब्द अलग-2 हो (समान न हो)
  - सुवरण को ढूँढ़त फिरत कवि, व्यभिचारी, चोर
* अतिशयोक्ति — किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर पेश करना
* रूपक — (-) योजक का चिह्न आयेगा, सा, सी नहीं आयेगा।

vmentoracademy.com सामान्य हिन्दी examtrix.com

रस का तात्पर्य - निचोड़ है।

रस

रस - नाट्य शास्त्र के आचार्य भरत मुनि के अनुसार रस - "विभावानुभाव व्यभिचारि संगोयाद्रस निष्पत्तिः" अर्थात विभाव अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से रस की उत्पत्ति होती है।

भाव
- स्थायी भाव - जो भाव मन में अधिक समय तक रहते (संख्या - 9)
- संचारी भाव - जो भाव मन में कुछ समय तक रहते * इनकी संख्या 33 है।
  निर्वेद, ग्लानि, मद, मोह, विषाद, शंका, चापल्य, गर्व, जड़ता, स्मृति, मृत्यु, व्याधि, उन्माद, स्वप्न, भ्रम, त्रास, विबोध, निद्रा, आवेग, दैन्य, अवहित्थ, वितर्क, व्रीड़ा, आलस्य, धैर्य, मति, उत्सुकता, असूया, चिन्ता, अपस्मार, अमर्ष, उग्रता, हर्ष।

विभाव
- आलम्बन * जिसके कारण स्थायी भाव उत्पन्न होता। जैसे - करुणा में मृत व्यक्ति।
- उद्दीपन * स्थायी भाव को तीव्र करने वाली परिस्थिति जैसे - हास्य में हास्योत्पादक चेष्टायें।

अनुभाव → जो शारीरिक चेष्टा आन्तरिक मनोभावों को बाहर प्रकट करे जैसे - कम्पन, आँखे लाल होना।

1. सात्विक / अयत्नज (8 प्रकार की) 2. कायिक / अत्नज 3. वाचिक 4. आहार्य

1. अश्रु 2. कम्प 3. प्रलय 4. रोमांच 5. वैवर्ण्य 6. स्तम्भ 7. स्वेद 8. स्वरभंग

रसों के प्रकार -

रसों की संख्या 9 है। लेकिन भरतमुनि अनुसार 8 है। (शांत रस को रस नहीं माना)

रस	स्थाई भाव	प्रकार	देवता	वर्ण	रस पहचानने का तरीका	ट्रिक
* श्रृंगार	- रति / प्रेम	संयोग, वियोग	विष्णु *	श्याम	→ प्रेम, जुदाई, मिलन का अहसास	→ शराबी श्याम
* हास्य	- हास	*	प्रमथ *	सित	→ हंसी का अहसास	→ हाहा मत कर
* रौद्र	- क्रोध	*	रूद्र *	रक्त	→ क्रोध का अहसास	→ रोक रूरक्त को
* करुण	- शोक	*	यमराज *	कपोत	→ शोक का अहसास	→ कशम पोत की
* वीर	- उत्साह	दयावीर, दान, युद्ध, धर्मवीर	इन्द्र *	गौर	→ वीरता का अहसास	→ * * * *
* अद्भुत	- विस्मय / आश्चर्य	*	ब्रह्मा *	पीत	→ आश्चर्य का अहसास	→ अल्बा पी
* वीभत्स	- जुगुप्सा / घृणा	*	महाकाल *	नील	→ घृणा का अहसास	→ वीजुमान
* भयानक	- भय	*	कालदेव *	कृष्ण	→ भय का अहसास	→ भभका
* शांत	- शम / निर्वेद	*	नारायण *	कुंदेंदु	→ शान्ति, अकेलेपन का अहसास	* * *

TEZZAS CLASSES BY MOHIT YADAV

महत्वपूर्ण विपरीतार्थक शब्द -

शब्द	विपरीत शब्द
* अतिवृष्टि	अनावृष्टि
* अमर	मर्त्य
* अपेक्षा	उपेक्षा
* अपेक्षित	अनपेक्षित
* अर्वाचीन	प्राचीन
* अपकार	उपकार
* अनभिज्ञ	भिज्ञ
* अनुकूल	प्रतिकूल
* अनुराग	विराग/द्वेष
* अवलम्ब	निरालम्ब
* अक्षर	क्षर
* अथ	इति
* अल्पज्ञ	बहुज्ञ
* अत्यन्त	अनत्यन्त
* अधम	उत्तम/श्रेष्ठ
* अन्तरंग	बहिरंग
* अधोगामी	ऊर्ध्वगामी
* अनिवार्य	वैकल्पिक
* अवनि	अम्बर
* अटल	चंचल
* असीम	सीमित
* अर्पित	ग्रहित
* अपव्यय	मितव्यय
* अतिथि	आतिथेय
* अकाल	सुकाल
* अभिमानी	निराभिमानी
* अधुनातन	पुरातन
* अनुरक्त	विरक्त
* अवर	प्रवर
* अनंत	अंत
* आदि	अंत
* आस्था	अनास्था
* आलोक	तिमिर
* आग्रह	दुराग्रह
* आगमन	गमन
* आहूत	अनाहूत
* आविर्भाव	तिरोभाव
* आर्द्र	शुष्क
* आगामी	विगत
* इहलोक	परलोक
* इति	अथ/आदि
* उत्कृष्ट	निकृष्ट
* उन्मीलन	निमीलन
* उत्थान	पतन
* उद्धत	विनत
* उदार	कृपण/अनुदार
* उन्मुख	विमुख
* उत्कर्ष	अपकर्ष
* उत्तमर्ण	अधमर्ण
* उपसर्ग	प्रत्यय
* उन्मूलन	रोपण
* उक्त	अनुक्त
* उज्ज्वल	धूमिल
* उत्तम	अधम
* उष्ण	शीतल
* उपादेय	अनुपादेय
* उर्ध्व	अधर
* ऋजु	वक्र
* ऋद्धि	विपन्न
* एकत्र	विकीर्ण
* एकाग्र	चंचल
* एषणा	अनैषणा
* ऐहिक	पारलौकिक
* औरस	दत्तक
* कृतज्ञ	कृतघ्न
* कनिष्ठ	वरिष्ठ/ज्येष्ठ
* कपटी	निष्कपट
* करुण	निष्ठुर
* क्रूर	सदय
* कुसुम	वज्र
* कीर्ति	अपकीर्ति
* कुटिल	सरल
* कर्मठ	आलसी
* कृश	पुष्ट/स्थूल/प्रवृद्ध
* कलुष	निष्कलुष
* कृपा	कोप/अकृपा
* कृत्रिम	नैसर्गिक/प्रकृत/स्वाभाविक
* करुण	क्रूर, निष्ठुर
* कल्पनातीत	काल्पनिक
* कदाचार	सदाचार
* खण्डन	मण्डन
* गम्भीर	उथला/वाचाल/चपल
* गूढ़	प्रकट
* ग्रस्त	मुक्त
* घात	प्रतिघात
* चेतन	अचेतन/जड़
* निरन्तन	नश्वर
* जड़	चेतन
* जंगम	स्थावर
* जाग्रत	सुप्त/सुषुप्त
* ज्वलन	शमन
* तमस	सात्विक
* तृष्णा	वितृष्णा/तृप्ति
* तिक्त	मधुर
* तरुण	वृद्ध
* तेजस्वी	निस्तेज
* तटस्थ	सापेक्ष
* दास	स्वामी
* दुर्लभ	सुलभ
* दुर्गम	सुगम
* दीर्घ	ह्रस्व/सूक्ष्म/लघु
* दैहिक	ऐहिक
* द्वन्द्व	शान्ति
* धृष्ट	नम्र
* धीरोदात्त	धीरोद्धत
* नूतन	पुरातन
* निर्मल	मलिन
* निरोग	रोग
* नीरस	सरस
* निर्दय	सहृदय/दयालु
* निद्रा	जागरण
* निन्दा	स्तुति
* नैसर्गिक	कृत्रिम
* निर्माण	विध्वंस
* निरामिष	आमिष
* परोक्ष	प्रत्यक्ष/अपरोक्ष
* पतिव्रता	कुलटा
* प्रत्यक्ष	परोक्ष
* पल्लवन	संक्षेपण
* प्रफुल्ल	म्लान
* प्रधान	गौड़
* पाश्चात्य	पौरस्त्य/पौर्वात्य/पूर्वीय
* प्राचीन	अर्वाचीन/नवीन
* पूर्ववर्ती	परवर्ती/उत्तरवर्ती
* प्रवृत्ति	निवृत्ति

BY - MOHIT YADAV
vmentoracademy.com examtrix.com

विलोम शब्द - *

* प्रकृति - पुरुष
* बंधन - मोक्ष
* भाव - अभाव / कुभाव / दुर्भाव
* भूगोल - खगोल
* भेद्य - अभेद्य / दुर्भेद्य
* मर्त्य - अमर्त्य
* मूक - वाचाल
* महात्मा - दुरात्मा / दुष्टात्मा
* महायोगी - महाभोगी
* मानवता - नृशंसता
* योगी - भोगी
* युयुत्सा - मैत्री
* यथेष्ट - कम / स्वल्प
* राम - श्याम / रावण
* राजा - प्रजा / रंक
* रोगी - निरोगी
* राग - द्वेष / विराग
* रथी - पैदल सैनिक
* लजीला - बेशर्म / निर्लज्ज
* लघु - दीर्घ / गुरु
* लौकिक - अलौकिक / पारलौकिक
* वादी - प्रतिवादी
* विधवा - सधवा
* वैमनस्य - मैत्री / सौमनस्य
* वीर - कायर
* विधि - निषेध / विरुद्ध
* व्यष्टि - समष्टि
* वृष्टि - अनावृष्टि
* विराट - लघु
* विग्रह - समास
* विज्ञ - अज्ञ / अविज्ञ
* शाश्वत - क्षणिक
* संस्कृति - विकृति
* संकल्प - विकल्प
* सर्जन - ध्वंस
* संकीर्ण - विस्तीर्ण
* सामान्य - विशिष्ट
* स्तुति - निन्दा
* सूक्ष्म - स्थूल
* स्थूल - सूक्ष्म
* सकाम - निष्काम
* स्वकीया - परकीया
* सदाचार - दुराचार
* सुशील - दुश्शील
* स्थावर - जंगम
* संधि - विच्छेद
* सापेक्ष - निरपेक्ष
* स्वार्थ - परमार्थ
* सुयोग - कुयोग
* संयोग - वियोग
* सम्मुख - नेपथ्य
* सुबोध - दुर्बोध
* संकीर्ण - उदार
* सात्विक - तामसिक
* हर्ष - विषाद
* क्षणिक - शाश्वत / चिरंतन
* श्री गणेश - इतिश्री
* अवनति - उन्नति
* उत्कृष्ट - निकृष्ट
* उन्मुख - विमुख
* निर्दय - सदय
* वैराग - अनुराग
* सदाचार - व्यभिचार
* चेतन - अचेतन

BY. MOHIT
TEZZAQ CLASSES

!! साई कृपा !!
TEZZAS CLASSES
vmentoracademy.com examtrix.com

* तद्भव-तत्सम *

तद्भव - संस्कृत के शब्द जो हिन्दी में आने पर बदल जाते हैं।

शब्द

तत्सम - संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों लिखे जाते हैं।

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
* आमिय	अमृत	* अगुवा	अग्रणी	* आग	अग्नि
* अच्छर	अक्षर	* अस्तुति	स्तुति	* आँख	अक्षि
* अगम	अगम्य	* अंगुरि	अंगुलि	* आँगन	अंगण
* अनत	अन्यत्र	* अधरम	अधर्म	* आसरा	आश्रय
* आमचूर	आम्रचूर्ण	* अद्धा	अर्द्ध	* आँकर	आकार
* अनाज	अन्न	* अनेह	अस्नेह	* आँत	आन्त्र
* अदरक	आर्द्रक	* अपना	आत्मन्	* अजवाइन	यवानिका
* अमोल	अमूल्य	* अलग	अलग्न	* अच्छत	अक्षत
* अकास	आकाश	* अँगूठी	अंगुष्ठिका	* अखरोट	अक्षोर
* अनसन	अनशन	* अटारी	अट्टालिका	* अनाड़ी	अनार्य
* अँजुलि	अंजलि	* अगहन	अग्रहायण	* अकाज	अकार्य
* अगाड़ी	अग्रणी	* अहोह	अक्षोभ	* आखर	अक्षर
* अंगौहा	अंगप्रौहा	* असीस	आशीष	* अँगरखा	अंगरक्षक
* अंखुआ	अंकुर	* असाढ़	आषाढ़	* आँसू	अश्रु
* अमावस	अमावस्या	* अपढ़	अपठ	* ओला	उपाल
* अंगूठा	अंगुष्ठ	* आँगिया	अंगिका	* इमली	आम्लिका
* अचरज	आश्चर्य	* अलच्छन	अलक्षण	* इकलौता	एकलपुत्र
* अँधेरा	अंधकार	* अंस	अंश	* इतवार	आदित्यवार
* अकेला	एकल	* अनूठा	अनुत्य	* ईंट	इष्टिका
* अखाड़ा	अक्षवाट	* अलोना	अलवण	* उपास	उपवास
* अहीर	आभीर	* अरग	अर्क	* उगना	उद्गत
* अरपन	अर्पण	* आँच	अर्चि	* उठान	उत्थान
* अहेर	आखेट	* आभूसन	आभूषण	* उसास	उच्छ्वास
* अकथ	अकथ्य	* आचर	आंचल	* उखाड़ना	उद्घाटन
* अँगीठी	अग्निष्ठिका	* आज	अद्य	* उपरोक्त	उपर्युक्त
* अजान	अज्ञान	* आलस	आलस्य	* उछाह	उत्साह
* अफीम	अहि-फेन	* आम	आम्र	* उजला	उज्ज्वल
				* आँवला	आमलक

vmentoracademy.com
examtrix.com

तद्भव	तत्सम
उल्लू	उलूक
ऊँचा	उच्च
ऊँट	उष्ट्र
कहार	स्कन्धभार
कंघी	कंकती
केवट	कैवर्त
कड़ुआ	कटु
कपूर	कर्पूर
केस	केश
कोढ़	कुष्ठ
करम	कर्म
कुम्हार	कुम्भकार
करतब	कर्तव्य
किसान	कृषक
किवाड़	कपाट
कपूत	कुपुत्र
कौआ	काक
कलेश	क्लेश
कटहल	कंटकल
कान	कर्ण
खीर	क्षीर
खार	क्षार
खाट	खट्वा
खली	क्षालिय
खम्भा	स्तम्भ
गर्मी	ग्रीष्म
गोबर	गोमय/गोमल
गेंद	कंदुक
गांव	ग्राम
गधा	गर्दभ
गड्ढा	गर्त
गेंहू	गोधूम
गोंद	क्रोड़
घोड़ा	घोटक
घी	घृत

तद्भव	तत्सम
घर	गृह
घूंघट	गुंठन
चाँदनी	चान्द्रिका
चूना	चूर्ण
चितेरा	चित्रकार
चना	चणक
चबाना	चर्वण
चिड़िया	चटिका
चख	चक्षु
चौखट	चतुष्काष्ठ
छेद	छिद्र
छिलका	शकल
दमाद	जामाता
जोगी	योगी
जांघ	जंघा
जलना	ज्वलन
जवान	युवा
जेठ	ज्येष्ठ
जोबन	यौवन
जत्था	यूथ
जुगति	युक्ति
जमुना	यमुना
जोड़ा	युक्त
जूठा	जुष्ट
तीखा	तीक्ष्ण
तांबा	ताम्र
तुरत	त्वरित
तपसी	तपस्वी
त्योहार	तिथिवार
तीरथ	तीर्थ
थन	स्तन
दीवाली	दीपावली
दबाना	दमन
दूल्हा	दुर्लभ

तद्भव	तत्सम
दीया	दीप
दाई	धात्री
दरसन	दर्शन
दोना	द्रोण
दुबला	दुर्बल
दाढ़ी	दंष्ट्रिका
दही	दधि
दूध	दुग्ध
धोना	धावन
धरती	धरित्री
धीरज	धैर्य
धनियां	धनिक
धुँआ	धूम्र
धुनि	ध्वनि
नाखून	नख
नींद	निद्रा
नया	नव
नैन	नयन
नंगा	नग्न
नारियल	नारिकेल
नींबू	निम्बक
नेवता	निमन्त्रण
निबाह	निर्वाह
नहान	स्नान
नैहर	जातिगृह
पराठा	पर्पट
परनाली	प्रणाली
पीढ़ी	पीठिका
पांत	पंक्ति
पतोहू	पुत्रवधू
पाहन	पाषाण
परसों	परश्व:
प्यास	पिपासा
पसारना	प्रसारण
पतला	प्रतनु

अरबीशब्द

आजाद
ख़ूब
कानून
अखबार
तारीख
दफ्तर
वकील
सुबह
हिसाब
तूफान
जुलूस

तुर्कीशब्द

कैंची
तोप
कुरता
बारूद
चाकू
बेगम

पुर्तगाली

आलपीन
अलमारी
कमरा
तौलिया
कनस्तर

कुछ महत्वपूर्ण पर्यायवाची शब्द

* **जंगल**- अरण्य, वन, विपिन, अटवी, कानन, कान्तार
* अग्नि - आग, अनल, पावक, दव, धूम्रकेतु, धनञ्जय, जातवेद, हुताशन, वैश्वानर, कृशानु, रोहिताश्व, वह्नि
* **अचल**- गिरि, शैल, नग, महिधर, आद्रि
* पृथ्वी - अचला, क्षिति, धरा, वसुन्धरा, वसुधा धरती
* **अक्षर**- मोक्ष, वर्ण, शिव, ब्रह्मा
* अमृत - सुधा, आमिय, सोम, पीयुष, अमी
* **अभिजात**- श्रेष्ठ, उच्च, पूज्य, कुलीन
* अश्व - हय, वाजि, तुरंग, घोटक, घोड़ा, रविसुत, सैंधव
* **शोध**- गवेषण, खोज, जाँच, अनुसंधान
* अतिथि - पाहुन, मेहमान, आगुन्तुक, अभ्यागत
* **अभिप्राय**- अर्थ, तात्पर्य, आशय, मतलब, मायने
* आकाश - नभ, व्योम, पुष्कर, अंतरिक्ष, शून्य, अभ्र, द्यु, अक्र, सविता
* **सूर्य**- आदित्य, भास्कर, दिवाकर, दिनकर, मारीचिमाली, हंस
* आम - सहकार, रसाल, पियुम्ब, अमृतफल, अंब, फलश्रेष्ठ
* **आँख**- चक्षु, दृग, आँखि, अम्बक, चखदीदा, विलोचन, प्रेक्षण, लोचन, नयन
* आडम्बर - प्रपंच, ढकोसला, स्वांग, दिखावा, ढोंग
* **इच्छा**- अभिलाषा, आकांक्षा, कामना, उत्कंठा, रुचि, तृष्णा, मर्जी, लिप्सा, स्पृहा
* इन्द्र - सुरपति, सचीपति, शक्र, पुरन्दर, कौशिक, सुरेन्द्र, सुरेश, अमरपति, वज्रधर
* **उपहास**- हँसी, खिल्ली, उपेक्षा, अपमान
* ऐश्वर्य - वैभव, सम्पदा, सम्पन्नता, श्री, धनसम्पत्ति, ऋद्धि
* **कमल**- उत्पल, इन्दीवर, पद्म, नलिन, सरोज, अरविन्द, सरसिज, जलज, राजीव, अम्भोज, अम्बुज, पायोद्य, पुष्करीक, वारिज, पंकज
* **कपड़ा**- वस्त्र, दुकूल, पट, वसन, अम्बर, चर, चैल, परिधान
* **कल्पवृक्ष**- सुरतरु, हरिचन्दन, देववृक्ष, कल्पतरु, कल्पद्रुम, मन्दार
* **कर**- मालगुजारी, महसूल, शुल्क
* **कामदेव**- मदन, मनोभव, पन्चशर, मन्मथ, मनोज, केतन, मकरध्वज, रति पति, मीनकेतु, पुष्पधन्वा, मयन, मार, स्मर, मनसिज, कन्दर्प
* **किरण**- कर, मारीचि, मयूख, अंशु, रश्मि
* **कोयल**- पिक, कोकिल, श्यामा, मदनशलाका, कलघोष, वसन्त दूत, काकपाली
* **गणेश**- विनायक, एकदन्त, गणाधि, द्वयमातुर, गौरी सुत, मोदकप्रिय, महाकाय, हेरम्ब, गिरिजा नन्दन, भवानी-नन्दन
* **गंगा**- भागीरथी, जाह्नवी, सुरसरि, देवसरि, त्रिपथगा, सुरध्वनि, देवनदी, मन्दाकिनी, अलकनन्दा, देवापगा, विष्णुपदी
* **गृह**- घर, सदन, भवन, धाम, निकेतन, निकेत, आगार, निलय, गेह, शाला, ओक, अयनशाला, मकान
* **चपला**- विद्युत, बिजली, चंचला, दामिनी, तड़ित
* जमुना - सूर्यसुता, कालिन्दी, कालगंगा, अर्कजा, तरणिजा, कृष्णा, भानुजा, यमुना, रविनन्दनी।

पर्यायवाची शब्द

vmentoracademy.com examtrix.com

* **घुमक्कड़** - रमता, सैलानी, यायावर, घुमन्तू
  चन्द्रमा - शशी, मयंक, निधि, सुधाकर, शशांक
* **जल** - पानी, वारि, नीर, सलिल, अम्बु, तोय, पय, जीवन, उदक, अमृत, सारंग, वन, बिंब, शम्बर, सर्वमुख
* **तलवार** - असि, कृपाण, खड्ग, चन्द्रहास, करवाल, शमशीर
* **युवती** - युवती, मनोज्ञा, सुन्दरी, यौवनवती, प्रमदा, रमणी, तरुणी
* **तालाब** - तड़ाग, सर, जलाशय, पुष्कर, कासार, सरसी, ह्रद, दह, द्रह
* **अन्धकार** - तिमिर, ध्वान्त, अंधेरा, तमिस्रा
* **वृक्ष** - पेड़, पादप, द्रुम, विटप, रूख, गाँछ
* **तोता** - शुक, कीर, सुआ, सुग्गा, रक्ततुण्ड, दाड़िम, प्रिय
* **तेज** - तीव्र, द्रुत, शिर्प
* **दिन** - वासर, दिवा, दिवस, वार
* **दिनांक** - तिथि, मिति
* **ब्राह्मण** - द्विज, वेदविद, ब्रह्मज्ञानी
* **कठिन** - अगम्य, विकट, औघट
* **दूध** - क्षीर, पय, गोरस, पीयूष, दुग्ध
* **नदी** - सरिता, निर्झरिणी, तरंगिणी, पयस्विनी, तरनी, लहरी, तरिणी, निम्नगा, सरमाला, कल्लोलिनी
* **नाजुक** - कोमल, सुकुमार, मृदुल, मसृण, स्निग्ध
* **नैसर्गिक** - प्राकृतिक, स्वाभाविक, वास्तविक
* **पत्थर** - पाषाण, अश्म, संग, प्रस्तर, पाहन, शिला, उपल, उत्पल
* **पति** - भर्ता, वल्लभ, भतरि, आर्यपुत्र, ईश, स्वामी
* **पत्नी** - भार्या, दारा, वल्लभा, वामा, कान्ता, दिय, प्रिया
* **पर्वत** - भूधर, गिरि, शैल, नग, भूमिधर, मेरु, महीधर, तुंग, अचल, धराधर
* **पवन** - वायु, वात, प्रभंजन, प्राण, मृगवाहन, नभप्राण, पवमान, अनिल, समीर
* **पक्षी** - द्विज, अंडज, विहग, खग, विहंग, शकुन्त, शकुनि, पतंग, परवेरु, परिन्दा
* **संध्या** - सांयकाल, गोधूलि, प्रदोषकाल, सांझ, निशारम्भ, दिनान्त।
* **पुत्र** - तनय, आत्मज, सुत, औरस, पूत
* **पृथ्वी** - भू, अचला, उर्वि, मेदनी, मही, वसुधा, धात्री, जगती, क्षिति, बीजप्रसु, अवनि, इला
* **पुष्प** - कुसुम, प्रसून, वतान्त, मंजरी, पुहुप, गुल, सुमन
* **बादल** - नीरद, जलद, पयोधर, सारंग, जीमूत, बलाहक, अम्बुद
* **मछली** - मीन, मत्स्य, शफरी, झष, जलजीवन
* **मयूर** - मोर, केकी, कलापी, शिखी, शिखण्डी, सारंग, हरि, शिव-सुत-वाहन, बर्हि, ध्वजी
* **रात** - रैन, रजनी, निशा, निशीथ, क्षपा, यामिनी, विभावरी, शर्वरी, तमी, विभा, तमिस्रा, क्षणदा
* **समुद्र** - सिन्धु, सागर, जलधि, उदधि, पारावार, नदीश, पयोनिधि, रत्नाकर, अर्णव, नीरनिधि, वारिधि, नीराधि, तोयनिधि, वारीश, आब्धि।
* **साँप** - अहि, भुजंग, मणिधर, फणीधर, व्याल, फणी, उरंग, द्विजि, सरीसृप
* **सोना** - स्वर्ण, कंचन, हाटक, हिरण्य, धामीकर, पुष्कल, जातरूप, तामरस, रुक्म, कनक
* **हिरन** - मृग, सारंग, हरिण, सुरभि, कुरंग, चितल
* **हाथी** - हस्ती, कुंजर, दन्ती, सिन्धुर, मतंग, व्याल, वितुण्ड, द्विप, गयन्द, वारण
* **सारंग** - सिंह, हाथी, कोयल, कामदेव, मृगा
* **सिंह** - पुण्डरीक, चिबुक, शार्दूल, हरि, मृगराज, व्याघ्र

MOHIT

* अनेक शब्दों के लिए एक शब्द :-

vmentoracademy.com

examtrix.com

* जनता में सुनी-सुनाई बात - किंवदंती *
* जिसका कोई उद्देश्य न हो - निरुद्देश्य *
* जिसका कोई शत्रु न हो - अजातशत्रु *
* जो बात पहले कभी न हुई हो - अभूतपूर्व *
* जानने की इच्छा रखने वाला - जिज्ञासु *
* जो उपकार न मानता हो - कृतघ्न *
* उपकार मानने वाला - कृतज्ञ *
* जिसे प्राप्त करना सरल हो - सुलभ *
* जिसे प्राप्त करना कठिन हो - दुर्लभ *
* अच्छे कुल में पैदा होने वाला - कुलीन *
* व्याकरण का पंडित - वैयाकरण *
* जो कम बोलता हो - मितभाषी *
* जहाँ पहुँचना सरल हो - सुगम *
* जहाँ पहुँचना कठिन हो - दुर्गम *
* जिसके कोई संतान न हो - निस्संतान *
* जिसकी पत्नी मर गई हो - विधुर *
* जिसका पार न पाया जाये - अपार *
* जिसका आदि न हो - अनादि *
* संध्या और रात के बीच का समय - गोधूलि *
* वीर-पुत्र को जन्म देने वाली - वीर-प्रसूता *
* बिना हल जोते उगने वाली फसल - अकृष्टपच्या *
* वह भूमि जो पहले न जोती गई हो - अकृष्टपूर्वा *
* जो कहा न जा सके - अकथ्य *
* जो घबराने वाला न हो - अकातर *
* जो जोता-बोया न गया हो - अकृष्ट *
* वह सेना जिसमें हाथी, घोड़ा सिपाही हो - अक्षौहिणी *
* जिसने किसी से ऋण लिया हो - अधमर्ण *
* रंग मंच पर पर्दे के पीछे का स्थान - नेपथ्य
* जो मापा न जा सके - अप्रमेय
* जिसे मोक्ष की कामना हो - मुमूर्क्षु मुमुक्षु
* मरने की इच्छा रखना - मुमूर्षा
* जिस स्त्री का पति जीवित हो - सधवा
* बहुत अधिक बोलने वाला - वाचाल
* जिसका इलाज न हो सके - असाध्य
* जिसे जीता न जा सके - अजेय
* जो क्षीण न हो सके - अक्षय
* जिसके सिर पर चन्द्र हो - चन्द्रशेखर
* जिसके हृदय में ममता नहीं - निर्मम
* जिसका छोटी जाति में जन्म हुआ हो - अन्त्यज
* आधी रात का समय - निशीथ

* महल के भीतरी भाग - अन्तःपुर *
* खाद्य सामग्री यात्रा के लिए - पाथेय *
* जो युद्ध करने की इच्छा रखता है - युयुत्सु *
* जो एक जगह से दूसरी जगह आता जाता हो - यायावर *
* जो नपा-तुला व्यय करता हो - मितव्ययी *
* दोपहर का समय - मार्तण्ड *
* वह स्त्री जिसे पति ने त्याग दिया - परित्यक्ता *
* जो मापा/प्रमाणित किया जा सके - प्रमेय *
* श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न शूरवीर - धीरोदात्त *
* शूरवीर किन्तु अभिमानी नायक - धीरोद्धत *
* जो दूसरों में दोष खोजता हो - छिद्रान्वेषी *
* जीतने की इच्छा - जिगीषा *
* जान से मारने की इच्छा - जिघांसा *
* जो जीना चाहता है - जिजीविषु *
* आदि से अंत तक - आद्योपांत *
* आदि और अंत - आद्यंत *
* जो मृत्यु के समीप हो - मरणासन्न *
* पर्वत के नीचे तलहटी की भूमि - उपत्यका *
* ऋण देने वाला - उत्तमर्ण *
* जिसका मन कहीं और हो - अन्यमनस्क *
* गुरु के निकट रहने वाला - अन्तेवासी *
* जिसे टाला न जा सके - अनिवार्य *
* जो वश में न हुआ हो - अनवर्य अनायत *
* जिसकी कीमत कम हो - अनर्घ्य *
* जंगल की आग - दावानल *
* जो बड़ों का आदर करना न जानता - निरीस *
* छाती के बल चलने वाला - उरग *
* जिसे बाहरी जगत का ज्ञान न हो - कूपमंडूक *
* वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले - अध्यूढा *
* पीछे-पीछे चलने वाला - अनुगामी *

× ×

TEZ GS ट्रिकेंस CLASSES
By- MOHIT SIR
C.R.P.F B.S.F I.T.B.P etc. Govt RAILWAY BANK

भारत में बजटीय प्रक्रिया
Budget Process In India

- 'बजट' शब्द की व्युत्पत्ति बूजट (फ्रांसीसी) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ होता है चमड़े का थैला। सर्वप्रथम फ्रांस में बजट शब्द का प्रयोग 1803 में किया गया था।

- **बजट क्या है?** सरकार की आय एवं व्यय का एक विवरण पत्र। अनु. 112 के तहत सरकार प्रतिवर्ष संसद के पटल पर एक दस्तावेज रखती है।

किसी भी बजट के दो भाग होते हैं
- 1. आय
- 2. व्यय

- **बजट कैसा होगा?** बजट घाटे का होगा या सन्तुलित या अतिरेक (अतिरेक बजट वह होता है जब सरकार व्यय से अधिक आय का बजट बनाती है) होगा यह आय एवं व्यय पर निर्भर करेगा।

घाटे के बजट को पूरा करने के लिए तीन स्रोतों पर विचार किया जाता है।
- 1. कर लगाना
- 2. ऋण लेना
- 3. घाटे की वित्त व्यवस्था

- **बजट से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य**
- भारत में पहला बजट 18 फरवरी 1860 को जेम्स विल्सन ने लॉर्ड कैनिंग के शासनकाल में प्रस्तुत किया।
- 1924 में दी गई आकवर्थ कमेटी की सिफारिश के आधार पर रेलवे बजट को अलग बजट के रूप में सामान्य बजट से पहले संसद में प्रस्तुत किया जाने लगा।
- स्वतंत्र भारत का पहला बजट 26 नव. 1947 को आर. के. षणमुखम् शेट्टी ने प्रस्तुत किया था।
- गणतन्त्र भारत का पहला केन्द्रीय बजट 1950 में जॉन मथाई ने प्रस्तुत किया था।
- अंग्रेजो ने बजट पेश करने का समय शाम 5 बजे तय किया।
- यशवंत सिन्हा ने बजट पेश करने का समय दिन के 11 बजे रखा।
- 1955-56 के पूर्व सभी बजट अंग्रेजी में छपते थे लेकिन सी.डी. देशमुख ने 1955-56 को बजट पेश करने से पहले सुनिश्चित किया कि बजट के सभी दस्तावेज हिन्दी में भी छपें।

भारत के 4 प्रधानमंत्री जो वित्तमंत्री के पद पर कार्यकर चुके हैं।
- मोरारजी देशाई
- चौ. चरण सिंह
- विश्वनाथ प्रताप
- डा. मनमोहन सिंह

- डा. मनमोहन सिंह वित्त मंत्री के पद पर रहते हुये एक बार भी बजट पेश नहीं किया।
- सर्वाधिक बार बजट पेश करने वाले वित्त मंत्री - मोरारजी देसाई (10 बार), पी. चिदम्बरम (8 बार)

बजट निर्माण के विभिन्न चरण
- बजट बनाना
- विधानमण्डल की स्वीकृति
- बजट का क्रियान्वयन
- लेखा परीक्षा

नोट- केन्द्र सरकार का आम बजट लोकसभा में फरवरी के अन्तिम कार्यदिवस पर प्रस्तुत किया जाता है। इस दिन वित्तमंत्री भाषण देता है जो दो भागो में होता है:
- पिछले वर्ष का आर्थिक सर्वेक्षण
- आगामी वर्ष का कराधान प्रस्ताव

इस भाषण की एक प्रति राज्य सभा में रखी जाती है।

बजट नियन्त्रण

बजटीय नियन्त्रण को निम्न समितियों द्वारा संचालित किया जाता है।

समितियाँ

लोक लेखा समिति

- स्थापना → 1950 में
- वर्तमान सदस्य सं० → 22 (15 लोकसभा से) (7 राज्य सभा से)
- सदस्यों का चुनाव → एकल संक्रमणीय पद्धति
- कार्य → यह सार्वजनिक निगमों, विभागीय उपक्रमों तथा परियोजनाओं के आय-व्यय के विवरण की जाँच करना आदि।

प्राक्कलन समिति

- स्थापना → 1950 में
- सदस्य सं. → 30
- चुनाव → एकल संक्रमणीय पद्धति
- कार्य → यह समिति सुझाव देती है कि संसद के समक्ष बजट अनुमानों को कैसे बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया जाए।

लोक सभा की स्थायी समितियाँ

- वर्तमान में लगभग 17 विभागीय समितियाँ गठित की जाती है। इनका प्रमुख कार्य राज्य सभा के सभापति, या लोकसभा के स्पीकर द्वारा सन्दर्भित सभी नीतिगत अभिलेखों पर विचार करके अपनी रिपोर्ट देना आदि।

दो राष्ट्रपति जो वित्त मंत्री रह चुके - R. वेंकटरमन, प्रणव मुखर्जी

बजट शब्दावलियाँ

- **समेकित निधि** — सरकार को प्राप्त सभी राजस्व, ऋण, ऋण अदायगी भारत की समेकित निधि होती है। इस निधि से व्यय करने के लिये सरकार को संसद से अनुमति लेनी पड़ती है।
- **आकस्मिक निधि** — भारत के राष्ट्रपति द्वारा आते आवश्यक अप्रत्याशित खर्चों के वहन के लिये आकस्मिक निधि का प्रावधान है। इस तरह के खर्च के लिये संसद की अनुमति के बाद में प्राप्त कर ली जाती।
- **वैट** — वह कर जो उत्पादन की प्रत्येक अवस्था पर मूल्य में होने वाली वृद्धि के आधार पर लगाया जाता है। वैट की संस्तुति 1976 में लक्ष्मीकान्त झा समिति ने की थी।
- **मॉडवैट** — वैट का संशोधित रूप है, इसमें अन्तिम उत्पादन पर देय शुल्क को घटाया जाता है।
- **सेनवैट** — उत्पाद शुल्क के विकल्प के रूप में शुरू किया गया वैट प्रणाली का एक कर है (सेन्ट्रेलाइज्ड वैल्यू एडेड टैक्स)
- **राजकोषीय घाटा** — सरकार की कुल आय-व्यय के अन्तर को राजकोषीय घाटा कहते है
- **राजस्व घाटा** — राजस्व आय और राजस्व व्यय के अन्तर को राजस्व घाटा कहते है
- **अवमूल्यन** — जब सरकार द्वारा जानबूझ कर भुगतान सन्तुलन को ठीक करने के लिये मुद्रा का मूल्य घटाया जाता
- **मूल्य ह्रास** — जब किसी देश की मुद्रा का मूल्य बाजार की शक्तियों के परिणामस्वरूप कम हो जाता है
- **बजटीय घाटा** — कुल प्राप्ति व कुल व्यय के मध्य अन्तर को।
- **शून्य आधारित बजट (जीरो बेस बजट)** — व्यय की प्रत्येक मद पर इस प्रकार विचार करना कि वह नयी हो। इसे सूर्यास्त बजट प्रणाली भी कहते है। जीरो बेस बजट के जनक पीटर. ए. पायर है। इस बजट को राष्ट्रीय बजट में सर्वप्रथम जिमी कार्टर (अमेरिकी राष्ट्रपति) ने अपनाया।
- **वित्तीय वर्ष** — 1 अप्रैल से 31 मार्च (यह परम्परा 1967 से शुरू हुई इससे पूर्व 1 मई से 30 अप्रैल मानी जाती थी)

केन्द्रीय सरकार के राजस्व व्यय का सबसे महत्वपूर्ण घटक → ब्याज भुगतान।

भूकम्प

vmentoracademy.com examtrix.com

पृथ्वी के भूपटल में किसी आंतरिक या आकस्मिक, प्राकृतिक या कृत्रिम कारणों से होने वाला कम्पन भूकम्प कहलाता है। भूकम्प आने से पहले रेडॉन गैसों की मात्रा में वृद्धि हो जाती है।

* भूकम्प मूल या उत्पत्ति केन्द्र - धरातल के नीचे जिस स्थान पर भूकम्प की घटना का प्रारम्भ होता है।
विश्व के अधिकांश भूकम्प 50 से 100 KM की गहराई पर उत्पन्न होते हैं।

* भूकम्प अधिकेन्द्र - भूकम्प मूल के ठीक ऊपर सम्बद्ध स्थान, जहाँ सर्वप्रथम भूकम्पीय तरंगों का पता चलता है।

* भूकम्प के कारण *
1. ज्वालामुखी के कारण
2. प्लेटों की गतिशीलता
3. अणुबम परीक्षण
4. प्रत्यास्थ-पुनश्चलन सिद्धान्त

इन्हें भी जानें!
* भूकम्पीय अध्ययन - सिस्मोलॉजी
* लहरों का अंकन - सीस्मोग्राफ
* तीव्रता का मापन - रिक्टर स्केल

प्रत्यास्थ-पुनश्चलन सिद्धान्त - इसके प्रतिपादक H.F रीड हैं। इनके अनुसार पृथ्वी के भूपटल के अधोभाग में स्थित चट्टानें रबर की भांति लचीली होती हैं। धीरे-2 इनमें खिंचाव की क्रिया सम्पन्न होती है। धीरे-2 बढ़ती जाती हैं और रबर की भांति टूट जाती हैं। और शीघ्रता से अपनी पूर्व की स्थिति में आने का प्रयास करती हैं। जिसके फलस्वरूप पृथ्वी में जोरों की कम्पन होता है जिसे भूकम्प के रूप में जाना जाता है।

ध्रुव भारत में निम्न स्थानों पर सीस्मोग्राफ की स्थापना की गई।

पूनम मुझको दिल दे दो।
पूना, मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली, देहरादून

गहराई के आधार पर भूकम्प के प्रकार -
1. सामान्य - इनकी गहराई 50 K.M तक होती है।
2. मध्यवर्ती - इनकी 50 से 250 K.M
3. पाताली - इनकी 250 से 700 KM

स्थिति के आधार पर भूकम्प दो प्रकार के होते हैं -
1. स्थलीय भूकम्प 2. सागरीय भूकम्प

भूकम्पीय लहरें - भूकम्पीय तरंगे P.S.L प्रकार की होती हैं।
* 1. P तरंगे (Primary) अनुदैर्ध्य तरंगे हैं। जो ठोस, द्रव, गैस तीनों माध्यम से होकर गुजर सकती हैं।
* 2. S तरंगे (Secondary) - S तरंगे अनुप्रस्थ तरंगे होती हैं ये द्रव से होकर नहीं गुजर सकती।
* 3. L तरंगे (Love) - ये धरातलीय तरंगे हैं। तथा ये से होकर भी गुजर सकती हैं। इनमें कम्पन की गति तथा सर्वाधिक होती हैं। ये तरंगे आदि-सिरे धमका देती। ये तरंगे सर्वाधिक विनाशकारी होती हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य
* हिमालय क्षेत्र भारत का सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र है।
* प्रशान्त महासागरीय तटीय पेटी में विश्व के 68% भूकम्पों का अनुभव किया जाता है।
* कश्मीर से अरुणाचल प्रदेश तक फैला हिमालय क्षेत्र सर्वाधिक भूकम्प प्रभावित क्षेत्र माना जाता है।
* सुनामी एक जापानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है - समुद्र तट पर आती लहरें
* सामान्यतः भूकम्प वर्ष की अवधि में 1000-1000 बार आते हैं।

प्रमुख संस्थान
* भारतीय मौसम विभाग - दिल्ली *
* भारत भू सर्वेक्षण विभाग - कोलकाता *
* राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रयोगशाला - कोलकाता *
* हिमालय भू-विज्ञान वाडिया संस्था - देहरादून *
* राष्ट्रीय भू-भौतिकी अनुसंधान - हैदराबाद *
* भूकम्प अभियांत्रिकी प्रशिक्षण - रुड़की *

* एक ही समय पर आने वाले भूकम्पीय क्षेत्रों को मिलाने वाली रेखा → हीमीसीस्मल
* समान भूकम्पीय तीव्रता वाले स्थानों को मिलाने वाली रेखा → समभूकम्पीय या समाघात रेखा

vmentoracademy.com examtrix.com

पर्वत (MOUNTAINS)

पर्वत धरातल के ऐसे ऊपर उठे भागों के रूप में पहचाने जाते हैं जिनका ढाल तीव्र होता है और शिखर भाग संकुचित होता है। *

सामान्यतः समुद्र तल से पर्वत की ऊँचाई 300 मी. या 1000 फीट से अधिक होती। इससे कम ऊँचाई के भू-भाग को पहाड़ी कहते।

लम्बे तथा संकरे पर्वतों को कटक कहते। पहाड़ व पहाड़ियों का ऐसा क्रम जिसमें कई कटक, शिखर, वाटियाँ हों पर्वत श्रृंखला कहलाती।

निर्माण प्रक्रिया के आधार पर पर्वत 4 प्रकार के होते हैं।

1. वलित (Fold Mountain)

वलित पर्वत संसार में सर्वाधिक पाये जाते हैं। ये सर्वोच्च होते हैं जिनमें हिमालय सर्वोच्च है। इनका निर्माण परतदार/अवसादी चट्टानों से होता। वलित पर्वतों में जीवाश्म की प्राप्ति होती। भारत का अरावली विश्व का प्राचीनतम वलित पर्वत है। *

* उ० अमेरिका का रॉकी * दक्षिणी अमेरिका का एण्डीज * यूरोप का आल्पस * एशिया का हिमालय एवं यूराल
* अफ्रीका का एटलस * ऑस्ट्रेलिया का ग्रेट डिवाइडिंग रेंज। *

2. भ्रंशोत्थ/अवरोधी/ब्लॉक पर्वत

ये सीधी ढलान वाले पर्वत होते। *

* जर्मनी का Black Forest पाकिस्तान का साल्ट रेंज भारत का नीलगिरि उ० अमेरिका का सियरा नेवादा (सबसे बड़ा ब्लॉक पर्वत) *

3. ज्वालामुखीय या संचयित पर्वत

ज्वालामुखीय उद्गार से निकलने वाले पदार्थ के जमाव से निकसित पर्वत ज्वालामुखीय पर्वत कहते। *

इटली का विसूवियस फ्यूजीयामा (जापान) किलिमंजारो (अफ्रीका) माउण्ट पीपा (म्यांमार) कॉटोपैक्सी (इक्वेडोर)
चिली का एकांकागुआ (विश्व का सर्वाधिक ऊँचा ज्वालामुखी पर्वत) *

4. अवशिष्ट/अनाच्छादित पर्वत

संसार के वे सभी पर्वत जो एक लम्बे समयान्तराल में अपरदन की प्रक्रिया से काट-छाँट के बने होंवे। *

भारत का अरावली विंध्याचल पू० घाट पूर्वी घाट स्कॉटलैण्ड की पहाड़ियाँ। *

इन्हें भी जानें

* हिमालय के बाद एण्डीज विश्व का सर्वाधिक ऊँचा पर्वत है। * हाइट पर्वत (U.S.A. कैलिफोर्निया)
* भारत की सबसे लम्बी पर्वतमाला विंध्याचल है। * माउण्ट टिटलिस (स्विट्जरलैण्ड)
* अरावली पर्वत की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट आबू है। *
* एण्डीज विश्व की सबसे लम्बी पर्वत श्रृंखला है। *
* विश्व की सर्वोच्च पर्वत चोटी एवरेस्ट (8850 मी) हिमालय पर है *

विश्व के प्रमुख पर्वत शिखर

* एवरेस्ट (नेपाल) *
* गॉडविन ऑस्टिन (भारत) *
* कंचनजंघा (भारत-नेपाल) *
* लहात्से (नेपाल) *
* मकालू (नेपाल-चीन) *
* धौलागिरि (नेपाल) *

TEZZAS CLASSES BY MOHIT YADAV

पर्वत (MOUNTAINS)

vmentoracademy.com examtrix.com

[illegible] के रूप में पहचाने जाते हैं जिनका [illegible] शिखर भाग संकुचित होता है। *

सामान्यतः समुद्र तल से पर्वत की ऊँचाई 300 मी. या 1000 फीट से अधिक होती। इससे कम ऊँचाई के भू. भाग को पहाड़ी कहते।

लम्बे तथा संकरे पर्वतों को कटक कहते। पहाड़ व पहाड़ियों का ऐसा क्रम जिसमें कई कटक, शिखर, घाटियाँ हो पर्वत श्रृंखला कहलाती।

निर्माण प्रक्रिया के आधार पर पर्वत 4 प्रकार के होते हैं।

1. वलित (Fold Mountain)

वलित पर्वत संसार में सर्वाधिक पाये जाते हैं। ये सर्वोच्च होते हैं जिनमें हिमालय सर्वोच्च है। इनका निर्माण परतदार/अवसादी चट्टानों से होता। वलित पर्वतों में जीवाश्म की प्राप्ति होती। भारत का अरावली विश्व का प्राचीनतम वलित पर्वत है। *

* उ० अमेरिका का रॉकी * दक्षिणी अमेरिका का एण्डीज * यूरोप का आल्पस * एशिया का हिमालय एवं यूराल * अफ्रीका का एटलस * ऑस्ट्रेलिया का ग्रेट डिवाइडिंग रेंज। *

2. भ्रंशोत्थ/अवरोधी/ब्लॉक पर्वत

ये सीधी ढलान वाले पर्वत होते। *

* जर्मनी का Block Forest पाकिस्तान का साल्ट रेंज भारत का नीलगिरि उ० अमेरिका का सियरा नेवादा (सबसे बड़ा ब्लॉक पर्वत) *

3. ज्वालामुखीय या संचयित पर्वत

ज्वालामुखीय उद्गार से निकलने वाले पदार्थ के जमाव से विकसित पर्वत ज्वालामुखीय पर्वत कहते। *

इटली का विसूवियस फ्यूजीयामा (जापान) किलिमंजारो (अफ्रीका) माउण्ट पोपा (म्यांमार) कॉटोपैक्सी (इक्वेडोर) चिली का एकांकागुआ (विश्व का सर्वाधिक ऊँचा ज्वालामुखी पर्वत) *

4. अवशिष्ट/अनाच्छादित पर्वत

संसार के वे सभी पर्वत जो एक लम्बे समयान्तराल में अपरदन की की प्रक्रिया से काट-छाँट के बने होवे। *

भारत का अरावली विंध्याचल पू० घाट पूर्वी घाट स्कॉटलैण्ड की पहाड़ियाँ। *

इन्हें भी जानें

* हिमालय के बाद एण्डीज विश्व का सर्वाधिक ऊँचा पर्वत है। * ब्लाइट पर्वत (U.S.A. कैलिफोर्निया)
* भारत की सबसे लम्बी पर्वतमाला विंध्याचल है। * माउण्ट टिटलिस (स्विट्जरलैण्ड)
* अरावली पर्वत की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट आबू है। *
* एण्डीज विश्व की सबसे लम्बी पर्वत श्रृंखला है। *
* विश्व की सर्वोच्च पर्वत चोटी एवरेस्ट (8850 m) हिमालय पर है *

विश्व के प्रमुख पर्वत शिखर

* एवरेस्ट (नेपाल) *
* गॉडविन ऑस्टिन (भारत) *
* कंचनजंघा (भारत-नेपाल) *
* ल्होत्से (नेपाल) *
* मकालू (नेपाल-चीन) *
* धौलागिरि (नेपाल) *

vmentoracademy.com examtrix.com

वायुमण्डल (Atmosphex)

पृथ्वी के चारो तरफ व्याप्त गैसीय आवरण को वायुमण्डल कहते हैं। हमारा वायुमण्डल पाँच भागों में बंटा है।

वायुमण्डल के विभिन्न स्तर क्रम से (धरातल से ऊपर की ओर)

ट्रिक

हाल सभाओ में आके बोल
- बाह्य मण्डल E
- आयन मण्डल I
- ओजोन मण्डल M
- समताप मण्डल S
- क्षोभ मण्डल T

वर्षा आंधी लाये क्षोभमण्डल
समताप उड़ाये वायुयान
ओजोन बचाये हमारी लाज
C.F.C करे सत्यानाश
सिग्नल मिलाये आयन मण्डल
हा. ही. करे बाह्य मण्डल

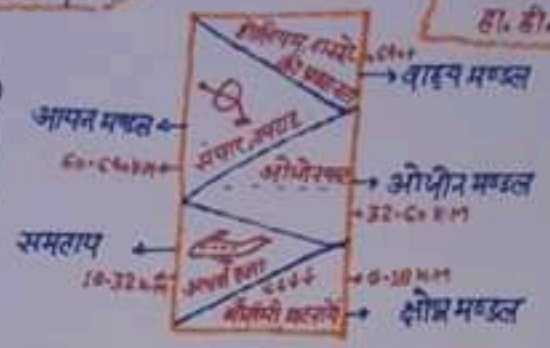

वायु मण्डल के निचले हिस्से में कार्बन डाई आक्साइड, नाइट्रोजन आक्सीजन जैसी भारी गैसों की प्रधानता है।

ऊपरी हिस्से में हाइड्रोजन, हीलियम, नियोन जैसी हल्की गैसे पायी जाती हैं।

1. क्षोभमण्डल - यह वायु मण्डल की सबसे निचली परत है। इसे संवहन, परिवर्तन मण्डल भी कहते हैं। हिसाब दबोर ने इसकी खोज की। इस मण्डल में वर्षा, आंधी जैसी मौसमी घटनायें घटती है। धरातल से इसकी ऊंचाई ध्रुवो पर 8 KM व विषुवत रेखा पर 18 KM होती है।

2. समताप मण्डल - इसकी ऊँचाई 18 से 32 KM है। इसका तापमान समान रहता है। तथा वायुयान उड़ाने की आदर्श दशा पायी जाती है। कभी-2 इस मण्डल में विशेष मेघों का निर्माण होता है जिन्हें मूलाभ कहते हैं।

3. ओजोन मण्डल - इसकी ऊँचाई 32 से 60 KM है। इस मण्डल में ऊँचाई के साथ तापमान बढ़ता है। तथा प्रति 1 KM पर 5°C की वृद्धि होती है। इस मण्डल में एक ओजोन परत पायी जाती है जो सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणों को अवशोषित कर लेती है। अतः इसे पृथ्वी का सुरक्षा कवच कहते हैं। इस परत को हानि पहुँचाने वाली गैस C.F.C है। इस परत की मोटाई नापने की इकाई डॉबसन है।

4. आयन मण्डल - इसकी ऊँचाई 60 से 640 KM है। संचार उपग्रह इसी मण्डल में अवस्थित हैं।

5. बाह्य मण्डल - इसकी ऊँचाई 640 KM से ऊपर होती है इसमें हाइड्रोजन तथा हीलियम गैसों की अधिकता पायी जाती है।

वायुमण्डल में सर्वाधिक नाइट्रोजन गैस / नाइट्रो. + ऑक्सी. = 99%

By- MOHIT YADAV

English में

TrSt Me Io Ex (ट्रस्ट में आयो एक्स)
- Troposphere
- stratosphere
- Mesophere
- Ionosphere
- Exosphere

vmentoracademy.com examtrix.com

ज्वालामुखी:- ज्वालामुखी का सामान्य सा दरार या छिद्र से होता है। जिसके माध्यम से पृथ्वी के आन्तरिक भाग से लावा तथा अन्य पदार्थ धरातल के ऊपर आते हैं।

ज्वालामुखी के दौरान निकले छोटे-2 टुकड़ों को बम कहते हैं। मटर के दाने के आकार के टुकड़ों लैपिली कहते हैं। ज्वालामुखी से निकले पदार्थ जब छिद्र के चारों ओर जमा हो जाते हैं तो ज्वालामुखी शंकु का निर्माण होता है। अधिक जमाव के कारण शंकु का आकार बड़ा हो जाता है। जो एक पर्वत का रूप धारण कर लेता है जिसे ज्वालामुखी पर्वत कहते हैं। ज्वालामुखी के छिद्र को ज्वालामुखी मुख या क्रेटर कहते हैं। ज्वालामुखी का अत्यधिक विस्तृत रूप कोल्डेरा कहलाता है।

क्रेटर या कोल्डेरा में जल भर जाने के कारण यह झील का रूप ले लेता है।

राजस्थान की पुष्कर झील, महाराष्ट्र की लोनार झील, इथोपिया की लेवा झील कोल्डेरा झील के उदा० हैं।

* विश्व का सबसे बड़ा कोल्डेरा जापान का आसो है।

ज्वालामुखी के प्रकार:-

1. जाग्रत या सक्रिय – जिसमें सदैव उद्गार होता रहता है।
   जैसे- इटली की स्ट्रम्बोली, स्टाम्बोली।
2. प्रसुप्त ज्वालामुखी – जिनके उद्गार के बाद पुनः उद्गार की सम्भावना नहीं रह जाती लेकिन पुनः उद्गार हो जाता है।
   जैसे- इटली की - विसूवियस।
3. शांत/मृत – जिनके भविष्य में उद्गार की कोई सम्भावना नहीं है। तथा जिनके मुख में जल भर जाने से झीलों का निर्माण हो चुका।
   जैसे- ईरान की कोह सुल्तान, देवबन्द।

***कारण** - 1. प्लेटों का विपरीत दिशाओं में खिसकना
2. मैग्मा के लगातार दबाव। धमाके से कमजोर लोरों का टूट जाना।

प्रमुख ज्वालामुखी को याद करने की ट्रिक

*1. मृत या शांत ज्वालामुखी:- पापा देवकी को (शांत) करो
→ पोपा, देवबन्द, किलिमंजारो, कोह सुल्तान

*2. सक्रिय या जाग्रत ज्वालामुखी:- मोना से (जाकर) कोई रेस करे
→ मोनालीसा, सेमेरू, कोटोपैक्सी, ईरेबस, स्ट्रम्बोली, एटना

*3. प्रसुप्त ज्वालामुखी:- बम फ्यूज हो गया
→ विसूवियस, मेयाना, फ्यूजीयामा

मुख्य तथ्य:-

* विश्व का सर्वाधिक ऊँचा ज्वालामुखी पर्वत इक्वेडोर का कोटोपैक्सी है।
* अलास्का (U.S.A) के कटमई पर्वत को हजारों धुआंते की चोटी कहते हैं।
* स्ट्रम्बोली ज्वालामुखी को (लियारी द्वीप) भूमध्य सागर का प्रकाश स्तम्भ कहा जाता है।
* अंटार्कटिका का एक मात्र सक्रिय ज्वालामुखी माउण्ट वेस्ट है।
* आस्ट्रेलिया में एक भी सक्रिय ज्वालामुखी नहीं है।
* पश्चिम अफ्रीका का एक मात्र सक्रिय ज्वालामुखी कैमरून पर्वत है।
* संसार की सर्वाधिक सक्रिय ज्वालामुखी किलाउ है।
* विश्व के सर्वाधिक ज्वालामुखी परिप्रशान्त महासागरीय पेटी में पाये जाते हैं। इसे प्रशांत महासागर ज्वालामुख कहते हैं।

1. शांत - पोपा (म्यांमार), किलिमंजारो (तंजानिया), कोह सुल्तान व देवबन्द (ईरान)
2. प्रसुप्त - फ्यूजीयामा (जापान), मेयाना (फिलीपींस), विसूवियस (इटली)
3. सक्रिय - मोनालीसा (हवाई द्वीप अमेरिका), एकाना (अफ्रीका), ईरेबस (अंटार्कटिका), सेमेरू (इण्डोनेशिया) बैरन द्वीप (अंडमान निकोबार द्वीप, भारत) कोटोपैक्सी (इक्वेडोर) स्ट्रम्बोली (इटली), एटना (इटली)

vmentoracademy.com examtrix.com

भूगोल : अर्थ एवं परिभाषा :- भूगोल का शाब्दिक अर्थ है (गोल पृथ्वी), अंग्रेजी भाषा का शब्द Geography दो शब्दों से मिलकर बना है। Geo (पृथ्वी) Graphy (वर्णन)

अर्थात (पृथ्वी का वर्णन)

"भूगोल सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में मानव के निवास के रूप में वर्तमान समय तक प्रमाणित ग्रह पृथ्वी के बारे में तथ्यात्मक विवरणों के साथ सम्पूर्ण अध्ययन करने वाला विज्ञान है।"

परिभाषाएँ -

"भूगोल पृथ्वी की झलक को स्वर्ग में देखने वाला आभामय विज्ञान है।" → क्लैमेंटिस, टॉलमी

* सांस्कृतिक भूगोल का जनक → कार्ल-ओ-साउर
* गणितीय भूगोल का जनक → थेल्स व अनेक्जीमेण्डर

इन्हें भी जाने !

* ज्योग्राफिका शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किया ? → इरैटोस्थनीज (यूनानी) *
* भूगोल का जनक किसे माना जाता है ? → हिकेटियस, पुस्तक (जेस पीरियोइस)
* पृथ्वी के आकार को गोल माना ? → अरस्तू (प्रथम दार्शनिक) *
* मानचित्र कला का जनक माना जाता ? → टॉलमी को, पुस्तक (ग्रहीय परिकल्पना)
* सर्वप्रथम मानचित्र पर अंकित किया ? → बंगाल की खाड़ी (टॉलमी ने) *

* ऐतिहासिक भूगोल का पिता → हैरोडोटस *
* आधुनिक भूगोल का पिता → अलेक्जेण्डर वोन हम्बोल्ट *
* व्यवस्थित भूगोल के पिता → इरैटोस्थनीज *
* विश्व ग्लोब का निर्माता → मार्टिन बैहम *
* मानव भूगोल का जनक → ब्लॉश *
* विश्व मानचित्र के निर्माणकर्ता → अनेक्जीमेण्डर *

* विश्व में सर्वप्रथम भौगोलिक ज्ञान का विकास हुआ ? → भारत में *
* भूगोल के नामकरण व व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने का श्रेय ! → यूनानी (विद्वानों को) *
* मानव प्रजातियों के सर्वप्रथम वर्गीकरण का श्रेय ! → बर्नियर *
* पृथ्वी को नापने का आरम्भकर्ता कौन है ? → थेल्स *